शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

ग्रामीण समाज और आधुनिक संचार माध्यम

सविता (शोधार्थी)
भाषा अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

मनुष्य की प्रवृत्ति सदैव जिज्ञासु रही है, जो दूसरे के संबंध में जानने और अपने संबंध में जानकारी देने की रही है। प्राचीनकाल और आधुनिककाल की घटनाओं, जानकारियों और ज्ञानबोध के नवीनतम संसाधनों का उपयोग व्यक्ति, समाज, देश और विदेश के हाल-समाचारों आदि के संदर्भ में करते हैं। भारत विकासशील देश होने कारण यहां संदेश संप्रेषित करने के लिए ढ़ोल, नगाड़े, वार्ता, चौपाल, गोष्ठी आदि माध्यमों का मानव उपयोग करता था और कर रहा है ताकि संचार आमजन के बीच आबाध गति से संप्रेषित होता रहे। गौरतलब है कि संचार के विविध माध्यमों-दूरदर्शन, आकाशवाणी, इन्टरनेट और मोबाइल, हाल-समाचार, रीति-रिवाज, संस्कृति, प्रौद्योगिकी ज्ञान और मनोरंजन आदि की विस्तृत जानकारी समाज को परोस रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में ग्रामीण समाज पर आधुनिक संचार साधनों के प्रभावों के अध्ययन पर विचार किया गया है।

संचार साधन और ग्रामीण भारत

भारत गांवों का देश है तो ग्रामीण खबरें इससे कैसे अनछूई रह सकती हैं? भूमण्डलीकरण की देन है कि ग्रामीण खबरें आज सुर्खियों में हैं, जिसमें कृषि, ग्रामीण संस्कृति, और ग्रामीण लोक जीवन इत्यादि है। भूमण्डलीकरण और औद्योगीकरण ने ग्रामीण समाज को दूरदर्शन, आकाशवाणी, इन्टरनेट, मोबाइल और समाचार-पत्रों आदि के संचार माध्यमों से लैस किया है। ग्रामीण लोग इन संचार माध्यमों का उपयोग अपने दैनिक जीवन में कर रहे हैं, जिसकी वजह है कि ग्रामीण लोक में आज शिक्षा, रक्षा, चिकित्सा, राजनैतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टियों के प्रति जागरूक होने का सबसे बड़ा कारण संचार ही है। ग्रामीण अपनी अर्थव्यवस्था सुदृढ़ बनाने के लिए वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित कृषि करने लगे हैं। वृक्षारोपण, पशुपालन, मत्स्यपालन और कुक्कुटपालन आदि माध्यमों से इनकी आर्थिक स्थिति को मजबूती प्रदान करने में संचार माध्यम अपनी अहम भूमिका अदा कर रहे हैं। इतना ही नहीं वे देश के वर्तमान समय में सरकार द्वारा संचालित 'स्वच्छता अभियान' से अनभिज्ञ नहीं रहे। 'स्वच्छता अभियान' नगर, महानगर और देश के लोगों के स्वास्थ्य को बेहतर बना रहा है। ग्रामीण जनजीवन में इसके प्रति सजगता के लिए संचार माध्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका है। ग्रामीण समाज के लोग आज फेसबुक, वाट्सअप, टिवट्र, यूट्यूब, ई-मेल और इन्टरनेट आदि का उपयोग अपने दैनिक जीवन में कर रहे हैं।1

दूरदर्शन की भूमिका

आधुनिक समय में दूरदर्शन जनसंचार का सर्वाधिक सशक्त माध्यम है क्योंकि प्रेस केवल साक्षर जगत का ही साधन बन सका और रेडियो

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

केवल श्रव्य साधन के रूप में ही अधिक प्रचलित हुआ, दूरदर्शन ने प्रेस और रेडियो दोनों का समन्वय करके श्रव्य एवं दृश्य साधन के रूप में शिक्षित एवं अशिक्षित या साक्षर एवं निरक्षर दोनों के लिए जनसंचार मनोरंजन का साधन बन गया। भारत में दूरदर्शन का विकास अधिक पुराना नहीं है। अभी केवल 45 वर्ष पूर्व 1959 में दिल्ली में दूरदर्शन केन्द्र की स्थापना हुई। 15 सितम्बर, 1959 को स्कूलों तथा गाँवों के लिए एक प्रायोगिक सेवा के रूप में स्कूली बच्चों में विज्ञान की शिक्षा में रूचि पैदा करने के लिए इसका प्रयोग किया गया। वर्तमान समय में टी.वी. की पहुँच पाँच लाख गाँव तक हो गयी है।

मोबाइल और इन्टरनेट

दूरदर्शन के साथ ही साथ संचार के अन्य साधन जैसे-रेडियो, मोबाइल, इन्टरनेट, समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ इत्यादि ने भी ग्रामीण जीवन को अत्यधिक प्रभावित किया है। वर्तमान समय में जनसंचार के इन सारे साधनों तक ग्रामीण लोगों की पहुँच है, जिनके माध्यम से ग्रामीण अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए प्रयासरत हैं। आधुनिक संचार के विषय में राजेन्द्र मिश्र कहते हैं, "मास मीडिया की भूमिका विशेषकर टेलीविजन के क्षेत्र में बहुत बढ़ गया है और यह कृषि, स्वाथ्य, मनोरंजन, शिक्षा, विकास और सूचना के क्षेत्र में अनेक परियोजनाओं के माध्यम से कार्य कर रहा है। इस संबंध में इंटीग्रटेड रूरल डेवलेपमेंट प्रोग्राम (आईआरडीपी) नेशनल एम्प्लामेंट प्रोग्राम (एनआरआईपी) रूरल लेंडलेस एम्प्लामेंट गारण्टी प्रोग्राम (आरएलआईपी) जैसे कई कार्यक्रम बने हैं।"2

किसान कृषि कार्यों को बेहतर एवं वैज्ञानिक ढंग से करने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करता है। इसके द्वारा विभिन्न प्रकार के कृषि कार्यों को आसानी से किया जा सकता है और अनेक प्रकार के अनुसंधानों तथा विश्व बैंक की रिपोर्ट से सिद्ध हो चुका है कि आनलाइन शिक्षा, रेडियो, उपग्रह और दूरदर्शन आदि संचार माध्यमों द्वारा कृषि प्रौद्योगिकी का विकास हुआ है। कृषि प्रौद्योगिकी ने कृषि के प्रत्येक कार्य को आसान बना दिया है के साथ-साथ ही इसके द्वारा किसानों की दक्षता, जागरूकता एवं उत्पादकता में कई गुना ईजाफा हुआ है।

सूचना प्रौद्योगिकी और संचार माध्यमों द्वारा कृषि में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है जो सूचना प्रौद्योगिकी का सबसे अधिक उपयोग आधुनिक और विकसित तकनीकियों द्वारा प्राप्त करते हैं। समस्त जानकारी ग्रामीण समाज को रेडियो, टेलीविजन, इन्टरनेट, टेलीफोन, कम्प्यूटर और मोबाइल आदि विभिन्न साफ्टवेयरों के माध्यम से प्राप्त हो रही है। वर्तमान समय में कृषकों के लिए डी.डी. किसान चेनल, दूरदर्शन पर अनेक कार्यक्रम प्रसारित हो रहे हैं, जिसके माध्यम से किसान फसल से जुड़ी किसी भी समस्या का निदान, उपचार और लाभ लेने के लिए उपयुक्त समय और विधि आदि का अनेक प्रकार के सवालों के उत्तर प्राप्त कर सकते हैं। किसान घर बैठे ही कृषि विशेषज्ञों से सीधे बात कर सकते हैं और अपनी समस्याओं के लिए समाधान प्राप्त कर सकते हैं। हमारे देश के ज्यादातर कृषि एवं बागवानी विश्वविद्यालयों ने इस क्षेत्र विशेष फलों और अन्य फसलों के उत्पादन से सम्बन्धित सभी जानकारियाँ वेबसाइट पर उपलब्ध करा रही है, जिन्हें किसान इन्टरनेट के माध्यम से कम्प्यूटर पर प्राप्त कर सकते हैं।

जनसंचार माध्यमों की ग्रामीणों तक पहुँच

किसानों के लिए ये सब सुविधाएं होने के बावजूद भी किसान आज भी विकास की मुख्यधारा से

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कटा हुआ है। अर्जुन तिवारी ने लिखा है कि "किसान, मजदूर आज तक विकास से कोसो दूर हैं। उन तक सरकारी योजनाओं के बार में जानकारी नहीं पहुँच रही है। किसान मजदूर शिक्षा के अभाव से काफी दूर हैं। टी.वी., रेडियो जैसे संसाधन का उपयोग आज भी गरीब लोग मनोरंजन के लिए करते हैं। इन्हीं साधनों द्वारा गरीब लोगों तक सरकारी योजनाओं की जानकारी आसानी से मीडिया पहुँचा सकता है और मीडिया द्वारा ही धीरे-धीरे ये लोग मुख्य धारा में आ रहे हैं।"3

संचार और सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से कम्प्यूटर द्वारा नियंत्रित मशीनों का प्रयोग खेतों की जुताई करने, उन्हें समतल बनाने, फसल की बुआई करने तथा उसे काटने, निराई-गुड़ाई करने, खाद डालने और रासायनिक उर्वरकों का झिड़काव करने, जैसे कामों में सफलतापूर्वक किया जा रहा है। मैदानी कृषि के साथ ही संरक्षित खेती में भी फसलों की खाद, पानी, नमी इत्यादि का निर्धारण भी कम्प्यूटर द्वारा ही निश्चित किया जा रहा है। किन्तु किसानों को वैज्ञानिक कृषि की कार्यप्रणाली की जानकारी के अभाव में आज भी परंपरागत कृषि करनी पड़ रही है। सचिन सेठी ने अपने लेख 'किसान जीवन और मीडिया' में उल्लेख किया है कि "मीडिया सबसे अहम रोल अदा कर सकता है। उस वर्ग को विकास की धारा में शामिल करने के लिए जो विकास की धारा में शामिल नहीं है। मीडिया किसानों के लिए सरल भाषा में आडियो, विडियो, मूवीज, कार्टून, फिल्म, फोटो, नाटक को माध्यम बनाकर उन्हें जागरूक कर सकता है।"4

वर्तमान समय में ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का स्तर काफी सुधरा है। यह सुधार भी संचार की देन कहा जा सकता है। आज प्रत्येक ग्रामीण परिवार का बच्चा चाहे वह गरीब हो या अमीर विद्यालय जाता है। उनकी शिक्षा विद्यालयी स्तर तक ही नहीं सीमित रहती बल्कि वह आगे महाविद्यालय, विश्वविद्यालय और संस्थान में पढ़कर एक सफल इंजीनियर, डाॅक्टर, अध्यापक और अन्य क्षेत्रों में देश-विदेश में अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। आज सिर्फ ग्रामीण लड़के ही नहीं बल्कि ग्रामीण लड़कियाँ भी उच्च शिक्षा प्राप्त कर सम्मानपूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर रही हैं। यह सब संचार और सूचना क्रांति की ही देन कही जा सकती है। कुमुद शर्मा वर्तमान परिदृश्य को बयां करती हैं कि "वर्तमान समय में मीडिया पर पूंजीवादी प्रवृत्ति का प्रभाव बढ़ा है। आज आवश्यकता इस बात की है कि मीडिया जनमानस की आवाज बने। किसान की समस्याओं, कुपोषण, आदिवासी क्षेत्रों तथा जनकल्याणकारी योजनाओं की स्थिति के साथ शिक्षा का चित्रण खबरों में करे।"5

ग्रामीण परिवार में स्त्रियों की स्थिति में सुधार हुआ है। अब उन्हें पहले की तरह प्रताड़ित, अपमानित नहीं किया जाता है। आज यदि परिवार में लड़की का जन्म होता है तो परिवार के लोग उसे सहर्ष स्वीकार करते हैं। ग्रामीण लोग पहले अंधविश्वासों और कुरीतियों में विश्वास करते रहे हैं। इन सबको दूर करने में संचार ने ही सर्वाधिक सशक्त भूमिका का निर्वाह किया है। हरजीत सिंह ने अपने ब्लॉग में उल्लेख किया है कि "गरीब व किसान को विकास से जोड़ने के लिए मीडिया को सरकार की विकासशील योजनाओं को गरीबों व किसानों तक और जनता की जरूरतों तक पहुँचा जा सकता है। मीडिया किसानों को खेती की नयी-नयी किस्मों की जानकारी दे सकता है। देश दुनिया की खबरों से अवगत करा सकता है।"6 इसी संदर्भ में

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

आजम अली लिखते हैं कि "गरीब और विकासशील देशों में ज्यादातर किसान और मजदूर जैसे तबके, जो विकास से जोड़ने और उनकी दशा सुधारने की दिशा में मीडिया दो तरीकों से बहुत अहम भूमिका निभा सकता है। एक तो उनको बताया जाए कि उनके हक क्या है, दूसरा यह कि उनकी जिंदगी के हालात दुनिया के सामने लाये जाएँ।"6

भारत सरकार का ग्रामीण विकास मंत्रालय देश के प्रत्येक गाँव में ऐसे सार्वजनिक एवं सामुदायिक सूचना केन्द्र स्थापित कर रहा है जहाँ कम्प्यूटर और इन्टरनेट जैसी सुविधाएँ होंगी, किन्तु सरकार को इस काम में शीघ्रता लानी चाहिए। ग्रामीण लोगों के लिए ऐसे कृषि विश्वविद्यालयों की स्थापना करनी चाहिए, जिससे वे कृषि और बागवानी का वैज्ञानिक तरीके से कृषि कार्य को करना सीख सकें। जिससे वह ग्रामीण क्षेत्र में ही रहकर अपने कृषि कार्य को बेहतर तरीके से कर सकें, सम्मानपूर्वक जीवन यापन कर सकें। चूँकि आज भी 67 प्रतिशत लोग ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करते हैं, इसलिए इनके सर्वांगीण विकास के लिए संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी को और अधिक कार्य करने की आवश्यकता है तभी 'शस्य श्यामला' की सिद्धि हो सकेगी। इस संदर्भ में माधव शर्मा कहते हैं कि "समाज में मीडिया की पहुँच का अंदाजा लगाना बेहद मुश्किल है। मीडिया समाज की दशा व दिशा बदलने में सक्षम है। दुर्भाग्य से गरीब और विकासशील देशों में मीडिया की भूमिका या तो ऊँची पहुँच वाले राजनीतिज्ञों और तानाशाहों के दबाव में खुलकर सामने नहीं आ पाता या फिर उनकी विरूदावलियां गाने में ही अपना भला समझता हैं कारपोरेट सेक्टर की चमक-दमक में चुंधियाया मीडिया नीचे काश्तकार तबके के संघर्षों की कालिमा को नहीं देख पाता। मीडिया चाहे तो किसान मजदूरों को उनका हक दिला सकता है।"7

निष्कर्ष

मीडिया आधुनिक दौर में आधुनिक संचार पूरे विश्व को प्रभावित कर रहा है तो मानवीय विचार धारा कैसे अछूती रह सकती है को कुमुद शर्मा अपनी पुस्तक 'भूमण्डीकरण और मीडिया' में इस तथ्य को मजबूती से प्रस्तुत किया है कि "वर्तमान समय में जनसंचार के साधन शहरी लोगों के साथ-साथ ग्रामीण लोगों की निराशा, कुण्ठा, अवसाद की ओर घकेलने में अपनी प्रभावकारी भूमिका निभा रहा है। इस बात को स्पष्ट करने के लिए प्रो.पी.सी. जोशी की रिपोर्ट को स्वीकार किया जा सकता है। प्रो.पी.सी. जोशी के अनुसार "यदि संप्रेषण की तकनीक का उपयोग प्रभावशाली वर्ग के उपयोग की भूख बढ़ाने और उसे पूरा करने के लिए किया गया तो वह विशाल जन समुदाय में मौजूदा प्रौद्योगिकी डाह और वंचना के भाव को बढ़ाने का खतरनाक काम करेगी।"8

कहा जा सकता है कि आधुनिक संचार ने ग्रामीण समाज को प्रभावित किया है। यह आधुनिक संचार की ही देन है कि ग्रामीण समाज शिक्षा, रोजगार, कृषि यंत्रों आदि द्वारा अपने को संमृद्ध और समर्थ बना पाया है।

संदर्भ सूची

1. रामछबीला त्रिपाठी: प्रयोजनमूलक हिन्दी, पृ. 214
2. राजेन्द्र मित्रः मीडिया मंथन, पृ. 142
3. अर्जुन तिवारी: संपूर्ण पत्रकारिता, पृ. 25
4. सचिन सेठी: किसान जीवन और मीडिया, पृ. 2
5. कुमुद शर्मा: भूमण्डलीकरण और मीडिया, पृ.22
6. ब्लॉग
7. ब्लॉग

ISSN 2320 – 0871
17 फरवरी 2016

8. कुमुद शर्मा: भूमण्डलीकरण और मीडिया, पृ. 124